अध्याय-18

भारत के कृषि प्रदेश

(Agricultural Regions of India)

कृषि प्रदेशों का निर्धारण कृषि दशाओं, फसल उत्पादन की समरूपता तथा उत्पादन विधि एवं भूमि उपयोग के आधार पर किया जाता है। भारत में भौगोलिक विभिन्नता के कारण कृषिगत फसलों एवं कृषि उत्पादन विधियों में विविधता पायी जाती है, जिसके कारण अलग-अलग विद्वानों ने भारत के कृषि प्रदेशों का विभाजन किया है। कृषि प्रदेशों के सीमांकन में विद्वानों ने कृषि की समरूपता, विविध फसल, फसल संयोजन, फसलों एवं पशुओं का साहचर्य, कृषि उत्पादन विधि, श्रम, पूँजी का उपयोग, उत्पादित कृषिगत फसलों का उपयोग, कृषि संयन्त्र तथा आवास सम्बन्धी दशाओं आदि को ध्यान में रखकर किया जाता है।

डॉ. एम.एस.ए. रन्धावा ने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक *'Agricultural and Animal Husbandry in India (1958)'* प्रादेशिक भिन्नता फसल उत्पादन विशेषता एवं पशुपालन के आधार पर भारत को पाँच कृषि प्रदेशों में विभाजित किया गया है—

1. शीतोष्ण हिमालय कृषि प्रदेश—इसके अन्तर्गत उत्तरी हिमालय पर्वतीय क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है, जहाँ मुख्य रूप से चाय, चावल, फल, आलू, मक्का आदि फसलें बोयी जाती हैं। भौगोलिक विविधता के आधार पर इसे दो उपभागों में बाँटा गया है—

(अ) पूर्वी हिमालय कृषि प्रदेश—यहाँ वर्षा की मात्रा 250 सेमी. से अधिक होने के कारण चाय एवं चावल का उत्पादन किया जाता है। असोम, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम में इसका विस्तार पाया जाता है।

(ब) पश्चिमी हिमालय कृषि प्रदेश—इस क्षेत्र की जलवायु भूमध्यसागरीय के समरूप होने के कारण यहाँ विविध फलों का उत्पादन जैसे नाशपती, बादाम, केरी, बेरी, आलू आदि का किया जाता है। उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर राज्यों में यह प्रदेश विस्तृत है।

2. उत्तरी शुष्क गेहूँ उत्पादन कृषि प्रदेश—भारत के उत्तरी एवं उत्तर-पश्चिम में स्थित इस प्रदेश में 75 सेमी. वार्षिक वर्षा होती है, जिसके कारण गेहूँ, मक्का, कपास, गन्ना, जौ आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है। गेहूँ की फसल की प्रधानता पायी जाती है। यह कृषि प्रदेश पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग, दिल्ली, चण्डीगढ़, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात राज्यों में विस्तृत है।

3. पूर्वी चावल उत्पादक कृषि प्रदेश—इस क्षेत्र में 150 सेमी. वार्षिक औसत से अधिक वर्षा होती है, जिसके कारण अधिकतर भाग पर चावल तथा जूट, गन्ना, चाय व अन्य गौण फसलों का उत्पादन किया जाता है। इस कृषि प्रदेश का विस्तार भारत के उत्तरी-पूर्वी राज्यों, पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश, उत्तरी-पूर्वी तेलंगाना तथा उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग तक पाया जाता है।

4. दक्षिणी मोटे अनाज उत्पादक कृषि प्रदेश—इस क्षेत्र में 50 से 100 सेमी. औसत वार्षिक वर्षा होती है, जहाँ ज्वार-बाजरा, रागी, कपास, रेंडी, मूँगफली आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है। इस क्षेत्र में काली, पीली, लाल लेटेराइट मिट्टी का विस्तार पाया जाता है। यह कृषि प्रदेश दक्षिणी-पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र के पूर्वी भाग, गुजरात के दक्षिण में, तमिलनाडु, कर्नाटक के पूर्वी शुष्क प्रदेश तक विस्तृत है।

5. पश्चिमी समुद्र तटीय कृषि प्रदेश—इस प्रदेश में 250 सेमी. से अधिक वर्षा होने के कारण यह एक तर प्रदेश है, जहाँ वर्षभर आर्द्रता उच्च रहती है जिसके कारण नारियल, काजू, रबर, कहवा, इलायची, काली मिर्च आदि आर्द्र फसलें उत्पादित की जाती हैं। इसका विस्तार केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु के दक्षिणी समुद्र तटीय क्षेत्रों में पाया जाता है।

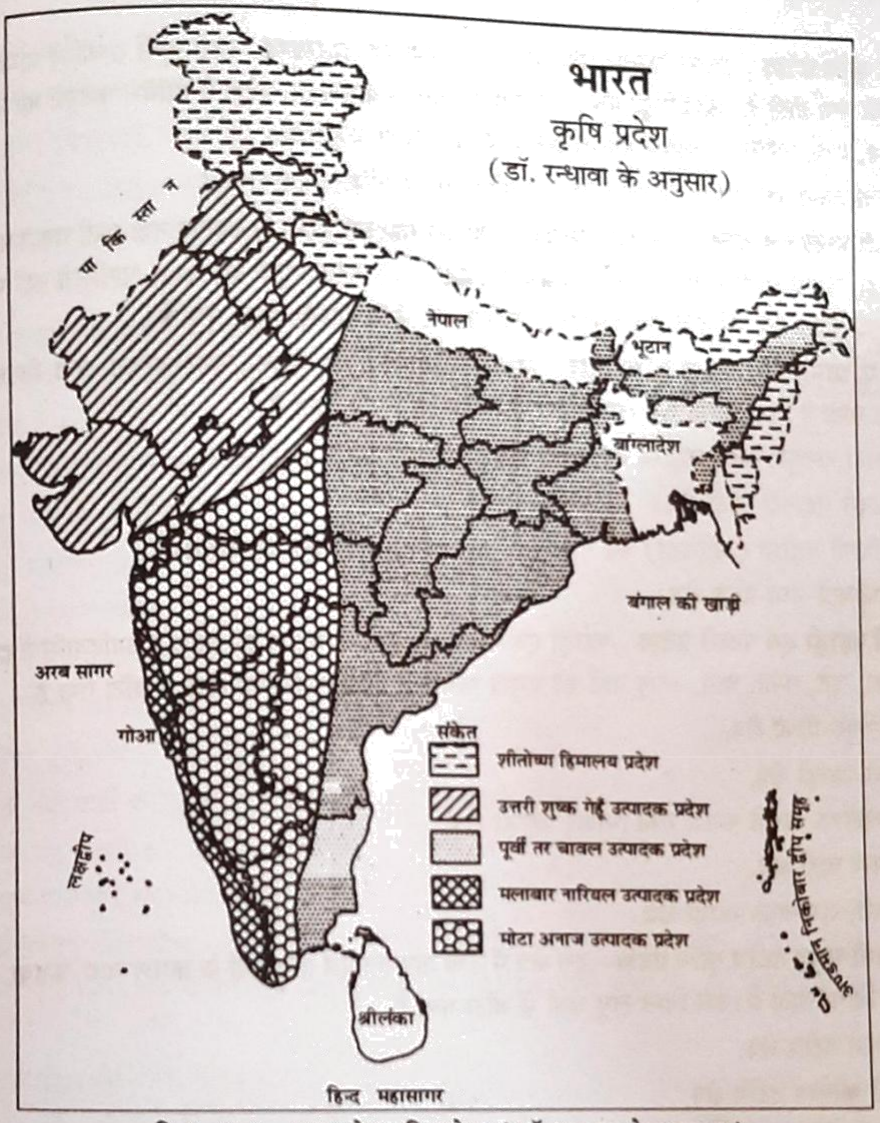

चित्र-18.1 : भारत के कृषि प्रदेश *(डॉ. रन्धावा के अनुसार)*

कुमारी पी. सेन गुप्ता के अनुसार कृषि प्रदेश—पी. सेन गुप्ता ने अपनी पुस्तक *'Economic Regionalisation of India'* में सर्वप्रथम भारत को क्रमबद्ध कृषि प्रदेशों में विभाजित किया। सर्वप्रथम जलवायु के आधार पर भारत को **चार कृषि पेटियों** में इसके बाद धरातलीय विविधता एवं जलवायु को आधार मानकर **11 उप कृषि प्रदेशों** में तथा फसल साहचर्यता की विविधता के आधार पर **60 लघु उप कृषि प्रदेशों** में विभाजित किया है।

1. **हिमालय कटिबन्धीय कृषि प्रदेश**—इसके अन्तर्गत उत्तरी पर्वतीय क्षेत्र सम्मिलित किया गया है, जहाँ 100 से 250 सेमी. वर्षा होती है। इसे दो उप भागों में विभाजित किया है—

(अ) पश्चिमी हिमालय प्रदेश—

(i) कश्मीर हिमालय जहाँ मुख्य रूप से गेहूँ, चावल, मक्का का उत्पादन किया जाता है।

(ii) कश्मीर घाटी प्रदेश।

(ब) पूर्वी हिमालय प्रदेश—इसे (i) दार्जीलिंग, सिक्किम हिमालय तथा (ii) अरुणाचल में विभाजित किया गया है। इस क्षेत्र में चावल, चाय, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है।

2. आर्द्र कृषि प्रदेश—इसका विस्तार पश्चिम बंगाल, मेघालय, झारखण्ड, उत्तरी-पूर्वी राज्यों में पाया जाता है, जहाँ 100 से 250 सेमी. वार्षिक वर्षा होती है। काँप मिट्टी एवं तटीय मैदानी भाग के कारण इस प्रदेश में विविध फसलों का उत्पादन किया जाता है। चावल, चाय, जूट, रबर, नारियल, विविध मसाले इस प्रदेश की प्रमुख फसलें हैं।

फसल संयोजकता के आधार पर इसे निम्न उप प्रदेशों में विभाजित किया गया है—

(अ) नदी घाटी एवं डेल्टाई उप कृषि प्रदेश—गंगा एवं महानदी डेल्टा से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक इसका विस्तार पाया जाता है। इस प्रदेश को (i) ऊपरी ब्रह्मपुत्र घाटी, (ii) निम्न ब्रह्मपुत्र घाटी, (iii) जलपाइगुडी क्षेत्र, (iv) भागीरथी नदी घाटी डेल्टा एवं मालदा प्रदेश, (v) गंगा नदी डेल्टा का पश्चिमी क्षेत्र तथा (vi) उड़ीसा तट में विभाजित किया गया है।

(ब) उ. पू. प्रायद्वीपीय पठारी कृषि प्रदेश—इस उप प्रदेश में चावल, मक्का, ज्वार-बाजरा, चना, तिलहन, गेहूँ आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है। इसे निम्नांकित लघु प्रदेशों में विभाजित किया जाता है—

(i) छोटा नागपुर, उत्तरी उड़ीसा का पठारी क्षेत्र।
(ii) ऊपरी महानदी घाटी क्षेत्र।
(iii) दक्षिणी उड़ीसा (ओडिशा) की पहाड़ियाँ, बस्तर पठार तथा वेनगंगा बेसिन।
(iv) मध्यवर्ती मध्य प्रदेश क्षेत्र।

(स) पूर्वी पहाड़ी एवं पठारी प्रदेश—पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र होने के कारण इस प्रदेश में आदिवासियों द्वारा स्थानान्तरित कृषि की जाती है। चावल, जूट, गन्ना, चाय, आलू यहाँ की प्रमुख फसलें हैं। इसे निम्न लघु क्षेत्रों में बाँटा गया है—

(i) मणिपुर-मिजो क्षेत्र,
(ii) गारो पहाड़ी क्षेत्र,
(iii) नागालैण्ड, उत्तरी कछार तथा मिकिर पहाड़ी क्षेत्र,
(iv) कछार घाटी क्षेत्र,
(v) खासी, जयन्तिया पहाड़ी क्षेत्र।

(द) पश्चिमी समुद्र तटीय कृषि प्रदेश—इस क्षेत्र में उच्च तापमान एवं तीव्र वर्षा के कारण चाय, कहवा, रबड़, नारियल, गर्म मसालों का उत्पादन किया जाता है। इसे निम्न लघु क्षेत्रों में बाँटा गया है—

(i) खम्भात तटीय क्षेत्र,
(ii) उत्तरी कोंकण तटीय क्षेत्र,
(iii) दक्षिणी कोंकण तट,
(iv) कर्नाटक का तटीय क्षेत्र,
(v) उत्तरी मलाबार तट,
(vi) दक्षिणी मलाबार तट।

3. उपार्द्र कृषि प्रदेश—इस प्रदेश में 75 से 100 सेमी. औसत वार्षिक वर्षा के साथ-साथ नहरों द्वारा सिंचाई भी की जाती है। गन्ना, गेहूँ, चावल, जूट, मक्का, ज्वार, मूँगफली, कपास, तिलहन, तम्बाकू यहाँ की प्रमुख फसलें हैं। इस प्रदेश के लगभग 70 प्रतिशत भाग पर कृषि फसलों का उत्पादन किया जाता है। इसे तीन मुख्य उपभागों में बाँटा गया है—

(अ) ऊपरी तथा मध्य गंगा का मैदान—नदियों द्वारा लायी उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, पर्याप्त वर्षा, नहरों द्वारा सिंचाई तथा उत्तम जलवायु के कारण इस क्षेत्र में सघन कृषि फसलें उत्पादित की जाती हैं। गेहूँ, चावल, गन्ना यहाँ की प्रमुख फसलें हैं। इस प्रदेश को निम्न लघु प्रदेशों में विभाजित किया गया है—

(i) ऊपरी गंगा यमुना दोआब,
(ii) निम्न गंगा यमुना दोआब,

(iii) रूहेलखण्ड मैदानी क्षेत्र,

(iv) ऊपरी गंगा नदी का तराई क्षेत्र,

(v) पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार का चम्पारन क्षेत्र,

(vi) उत्तर प्रदेश का तराई क्षेत्र तथा बिहार का उत्तरी मैदानी क्षेत्र,

(vii) गंगा नदी का दक्षिणी मैदनी भाग,

(viii) अवध का मैदान।

(ब) उपार्द्र प्रायद्वीपीय पठार—इस क्षेत्र में वर्षा की मात्रा के अनुसार ज्वार-बाजरा, गेहूँ, कपास, चना, तिलहन, मूँगफली, गन्ना आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है। कपास, गेहूँ, गन्ना फसलों की इस प्रदेश में प्रधानता पायी जाती है। इसे निम्न लघु प्रदेशों में विभाजित किया गया है—

(i) मालवा पठार तथा राजस्थान का समीपवर्ती क्षेत्र,

(ii) ताप्ती नदी की घाटी,

(iii) द. पू. महाराष्ट्र पठार,

(iv) उत्तरी तेलंगाना पठार,

(v) द. तेलंगाना पठार एवं कर्नाटक पठार,

(vi) बुन्देलखण्ड का उत्तरी भाग,

(vii) दक्षिणी बुन्देलखण्ड क्षेत्र,

(viii) ताप्ती नदी घाटी का ऊपरी भाग तथा वर्धा नदी की घाटी,

(ix) तमिलनाडु पठारी क्षेत्र,

(x) दक्षिणी मालनाद तथा मैदान क्षेत्र।

(स) उपार्द्र समुद्र तटीय प्रदेश—तटीय स्थिति होने के कारण इस प्रदेश में चावल, ज्वार, बाजरा, तिलहन, दालें आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है। इस क्षेत्र में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी की प्रधानता पायी जाती है। इसे निम्न लघु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है—

(i) आन्ध्र प्रदेश का उत्तरी तटीय क्षेत्र,

(ii) कृष्णा-गोदावरी नदियों का डेल्टाई क्षेत्र,

(iii) आन्ध्र प्रदेश का दक्षिणी तटीय क्षेत्र

(iv) तमिलनाडु का उत्तरी तट, जिसका विस्तार तंजावूर से चिग्लेपुट तक है,

(v) तमिलनाडु का द. पू. तटीय क्षेत्र,

(vi) गुजरात तटीय क्षेत्र।

4. शुष्क कृषि प्रदेश—इस कृषि प्रदेश में वर्षा का औसत 50 सेमी. से भी कम पाया जाता है। इसलिए यहाँ शुष्क जलवायु में उत्पादित फसलें बोयी जाती हैं। इसे दो उप भागों में विभाजित किया गया है—

(अ) शुष्क उत्तरी-पश्चिमी प्रदेश—वर्षा की कमी के कारण इस क्षेत्र में जहाँ सिंचाई सुविधाएँ हैं, फसलों का उत्पादन किया जाता है। गेहूँ, कपास, चना, ज्वार-बाजरा, तिलहन यहाँ की मुख्य फसलें हैं।

इसे निम्न लघु प्रदेशों में विभाजित किया गया है—

(i) थार मरुस्थलीय क्षेत्र,

(ii) राजस्थान, दिल्ली, उ. पू. उत्तर प्रदेश,

(iii) पंजाब का उत्तरी मैदानी क्षेत्र,

(iv) अरावली पहाड़ी क्षेत्र,

(v) कच्छ प्रायद्वीप तथा सौराष्ट्र प्रदेश।

(ब) शुष्क प्रायद्वीपीय कृषि प्रदेश—वृष्टि छाया क्षेत्र में आने के कारण इस प्रदेश में वर्षा का औसत निम्न है। इसलिए यहाँ ज्वार-बाजरा शुष्क फसलों का उत्पादन होता है। सिंचाई की सुविधा वाले क्षेत्रों में गेहूँ, कपास, मूँगफली, तिलहनों का उत्पादन किया जाता है।

इस प्रदेश को निम्न लघु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है—

(i) ताप्ती-नर्मदा नदी घाटी दोआब क्षेत्र,

(ii) ऊपरी गोदावरी नदी घाटी क्षेत्र,

(iii) ऊपरी भीमा-कृष्णा नदी घाटी क्षेत्र,

(iv) तुंगभद्रा नदी घाटी क्षेत्र,

(v) रायलसीमा पठारी क्षेत्र।

प्रो. आर. एल. सिंह तथा **जसबीर सिंह** ने भारत को फसलों के सम्बद्धता (संयोजन) के आधार पर **फसल संयोजन प्रदेशों** में विभाजित किया है। प्रो. आर. एल. सिंह ने 10 फसल संयोजन प्रदेशों में विभाजित किया है, जो निम्नलिखित हैं—

(i) चावल प्रदेश,
(ii) गेहूँ प्रदेश,
(iii) चना प्रदेश,
(iv) ज्वार-बाजरा प्रदेश,
(v) कपास प्रदेश,
(vi) मूँगफली प्रदेश,
(vii) मक्का प्रदेश,
(viii) रोपण कृषि प्रदेश,
(ix) सचल कृषि प्रदेश,
(x) नारियल प्रदेश।

प्रो. आर.एल. सिंह के समान ही भारतीय कृषि विद्वान जसबीर सिंह ने भी फसलोत्पादन साहचर्य प्रदेश नाम से कृषि साहचर्य प्रदेशों का वर्गीकरण किया है। सामान्यतया भारत को फसल संयोजकता के आधार पर निम्नांकित फसल साहचर्य प्रदेशों में वर्गीकृत किया गया है—

(1) चावल प्रदेश—इस फसल साहचर्य प्रदेश के अन्तर्गत उत्तरी-पूर्वी एवं पूर्वी राज्य, दक्षिणी समुद्र तटीय राज्य एवं कश्मीर घाटी को सम्मिलित किया जाता है। इस क्षेत्र में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी तथा जलवायु विविधता के आधार पर चावल के साथ फसल उत्पादन के निम्न उप साहचर्य प्रदेश पाए जाते हैं—

(i) चावल, जूट क्षेत्र,

(ii) चावल, गन्ना क्षेत्र,

(iii) चावल, तिलहन, दलहन, मक्का क्षेत्र

(iv) चावल, गेहूँ, तिल, गन्ना क्षेत्र,

(v) चावल, बाजरा, दाल, गन्ना क्षेत्र,

(vi) चावल, मूँगफली, गन्ना, दलहन क्षेत्र,

(vii) चावल, कपास, तम्बाकू क्षेत्र।

2. गेहूँ प्रदेश—इसका विस्तार भारत के उत्तर-पश्चिम में उन क्षेत्रों में पाया जाता है जहाँ वर्षा का औसत 60 सेमी. या इससे कम है। पंजाब, हरियाणा, उत्तरी राजस्थान, प. उत्तर प्रदेश, विन्ध्यन का पश्चिमी भाग तथा पूर्वी मालवा पठार तक इसका विस्तार पाया जाता है।

(i) गेहूँ, मक्का, चावल क्षेत्र,

(ii) गेहूँ, चावल, रागी क्षेत्र,

(iii) गेहूँ, कपास, चना, बाजरा क्षेत्र,

(iv) गेहूँ, तिलहन, दलहन, चना प्रदेश,

(v) गेहूँ, चावल, गन्ना, चना, दलहन प्रदेश,

(vi) गेहूँ, चना, चावल, बाजरा, दलहन क्षेत्र।

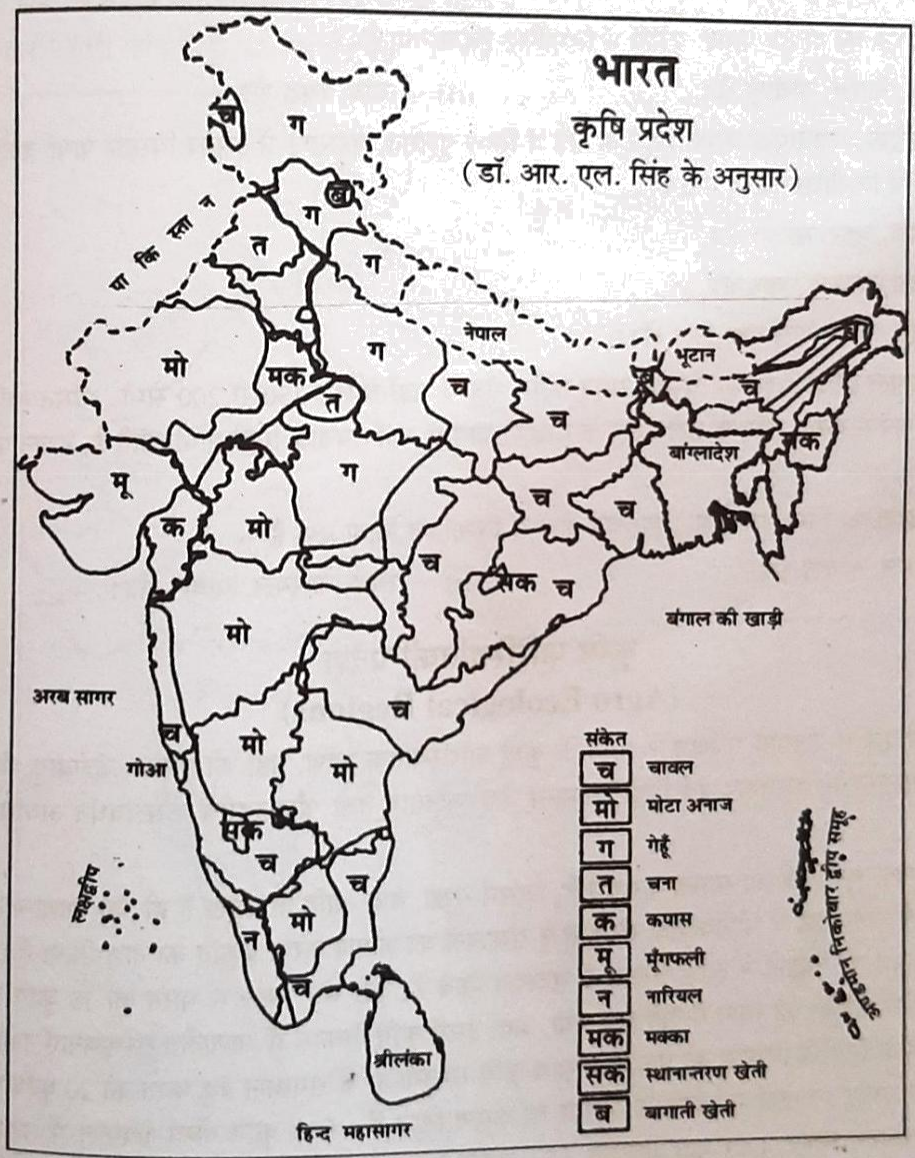

चित्र-18.2 : डॉ. आर. एल. सिंह के अनुसार भारत के कृषि प्रदेश

3. **ज्वार-बाजरा प्रदेश**—भारत के उत्तरी-पूर्वी शुष्क क्षेत्र तथा प्रायद्वीपीय भारत के वे क्षेत्र हैं, जहाँ वर्षा की मात्रा 50 से 100 सेमी. वार्षिक है। वहाँ ज्वार-बाजरा फसलोत्पादन अधिक किया जाता है। कर्नाटक, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, पश्चिमी मध्य प्रदेश, उत्तरी भाग को छोड़कर सम्पूर्ण राजस्थान, कच्छ क्षेत्र तक इसका विस्तार पाया जाता है।

(i) ज्वार, कपास, गेहूँ, तिलहन, दलहन क्षेत्र,

(ii) गेहूँ, कपास, चना, बाजरा क्षेत्र,

(iii) गेहूँ, तिलहन, दलहन, चना प्रदेश,

(iv) गेहूँ, चावल, गन्ना, चना, दलहन प्रदेश,

(v) गेहूँ, चना, चावल, बाजरा, दलहन क्षेत्र।

4. चाय प्रदेश—इसका विस्तार उष्ण तथा उपोष्ण आर्द्र क्षेत्रों में पाया जाता है, जहाँ वर्षा 200 सेमी. से अधिक होती है। इसका विस्तार उत्तरी-पूर्वी राज्यों, पूर्वी-उत्तर प्रदेश, प. बंगाल तथा दक्षिणी नीलगिरी की पहाड़ियाँ आदि तक है।

इस फसल प्रदेश को दो उप फसल प्रदेशों में विभाजित किया गया है—

(i) चाय, चावल, तम्बाकू क्षेत्र, (ii) चाय, रबड़ क्षेत्र

5. कपास प्रदेश—लावायुक्त काली मिट्टी के क्षेत्र में स्थित गुजरात, महाराष्ट्र में इसका विस्तार पाया जाता है। इसे निम्न उप फसल साहचर्य क्षेत्रों में विभाजित किया गया है—

(i) कपास, ज्वार, बाजरा क्षेत्र,

(ii) कपास, चावल, ज्वार क्षेत्र,

(iii) कपास, ज्वार, दालें तथा तिल क्षेत्र।

6. उद्यान फसल प्रदेश—इसका विस्तार समुद्र तटीय क्षेत्र में जहाँ वर्षभर 150 से 200 सेमी. औसत वार्षिक वर्षा होती है, पाया जाता है। मुख्य रूप से केरल राज्य के तटीय क्षेत्र के दक्षिणी भाग में जहाँ उपजाऊ मिट्टी पायी जाती है, उद्यान फसलोत्पादन किया जाता है।

इस फसल प्रदेश को निम्न उप फसल साहचर्य क्षेत्रों में विभाजित किया गया है—

(i) नारियल, चावल क्षेत्र, (ii) रबड़, नारियल, चावल क्षेत्र।

कृषि पारिस्थितिकी प्रदेश
(Agro Ecological Regions)

भारतीय मिट्टी एवं भू-उपयोग सर्वेक्षण ने भारत के कृषि पारिस्थितिक प्रदेश, यहाँ की फसल, जलवायु, मिट्टी के आधार पर तैयार किए हैं। यह मध्यस्तरीय भूस्वरूप एवं मिट्टी, सामान्य जैव-जलवायु तथा पाँच स्तरीय फसलवर्धन अवधिक अध्यारोपण से निर्मित है।

कृषि आज अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है, जिसमें सूखा, बाढ़ आदि तो प्रमुख हैं ही, जो खाद्यान्न उत्पादन में बाधक हैं, इनके अलावा बढ़ती जनसंख्या व भौतिकवादी संस्कृति ने संसाधनों का शोषण करके प्रकृति का नाश किया है। इन समस्याओं के समाधान हेतु समय-समय पर विद्वानों ने कृषि नीतियों में बदलाव किये हैं, जैसे सन् 1989 में भारत को 15 कृषि जलवायु प्रदेशों में बाँटा, लेकिन इसमें पारिस्थितिकी को ध्यान में नहीं रखा गया, अतः इसमें कृषि विकास में आशातीत सम्भावनाएँ नजर नहीं आईं। अतः कृषि वैज्ञानिकों ने कृषि के टिकाऊ विकास को प्रकृति के साथ कृषि समस्याओं के समाधान हेतु भारत को 20 कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्र व 60 उपक्षेत्रों में बांटा गया। इन क्षेत्रों में बांटने के आधार या कारण निम्न हैं—(1) कृषि योग्य क्षेत्रफल में ठहराव, (2) सीमित जल संसाधन, (3) पर्यावरण संकट, (4) मृदा अपरदन, (5) क्षारीय एवं लवणीय भूमियों में बढ़ोतरी, (6) पोषक तत्त्वों की कमी, (7) छोटी फसलों पर ध्यान। भारत के कृषि पारिस्थिति की प्रदेश निम्नलिखित हैं—

1. पश्चिमी हिमालय—इसका विस्तार हिमाचल प्रदेश व जम्मू कश्मीर में है, यहाँ छिछली मिट्टी मिलती है तथा वार्षिक तापमान 8°C तथा वर्षा 150 सेमी. है। फसलावधि 90 दिन से कम है। गेहूँ, चावल, मक्का, आलू, अंजीर, गुलाब आदि प्रमुख फसलें हैं।

2. पश्चिमी मैदान, कच्छ व पश्चिमी काठियावाड़ प्रदेश—इसमें गुजरात, राजस्थान, हरियाणा व पश्चिमी पंजाब सम्मिलित हैं। यहाँ मरु एवं क्षारीय मिट्टियाँ हैं साथ ही यहाँ उष्ण शुष्क जलवायु है। वर्षा 30 सेमी. होती है व फसलावधि 90 दिन है, यह सूखा एवं लवण पीड़ित क्षेत्र है। मूँगफली, गेहूँ, ज्वार, बाजरा व चावल यहाँ की प्रमुख फसलें हैं।

3. दक्कन पठार—इसका विस्तार आन्ध्र प्रदेश व कर्नाटक में है। यह तप्त शुष्क प्रदेश व लाल एवं काली मिट्टी का क्षेत्र है जहाँ वर्षा 40–50 सेमी. होती है। जलोढ़ मिट्टी में उपज अवधि 90–150 दिन की होती है। यहाँ मोटे अनाज एवं मूँगफली बोयी जाती है।

4. उत्तरी मैदान एवं मध्य उच्च भूमि का क्षेत्र—तप्त अर्धशुष्क क्षेत्र जहाँ वर्षा 40–80 सेमी. होती है तथा उपज अवधि 90–150 दिन की होती है। इसका विस्तार उ.-पू. गुजरात, पूर्वी राजस्थान व दक्षिणी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में है।

5. मालवा उच्च भूमि एवं काठियावाड़—यह काली मिट्टी का क्षेत्र है जहाँ वर्षा 60–90 सेमी. होती है। फसलावधि 90–160 दिन है, दोमट से गहरी काली कांप मिट्टी का क्षेत्र है। यह पूर्वी गुजरात एवं पश्चिमी मध्य प्रदेश में विस्तृत है।

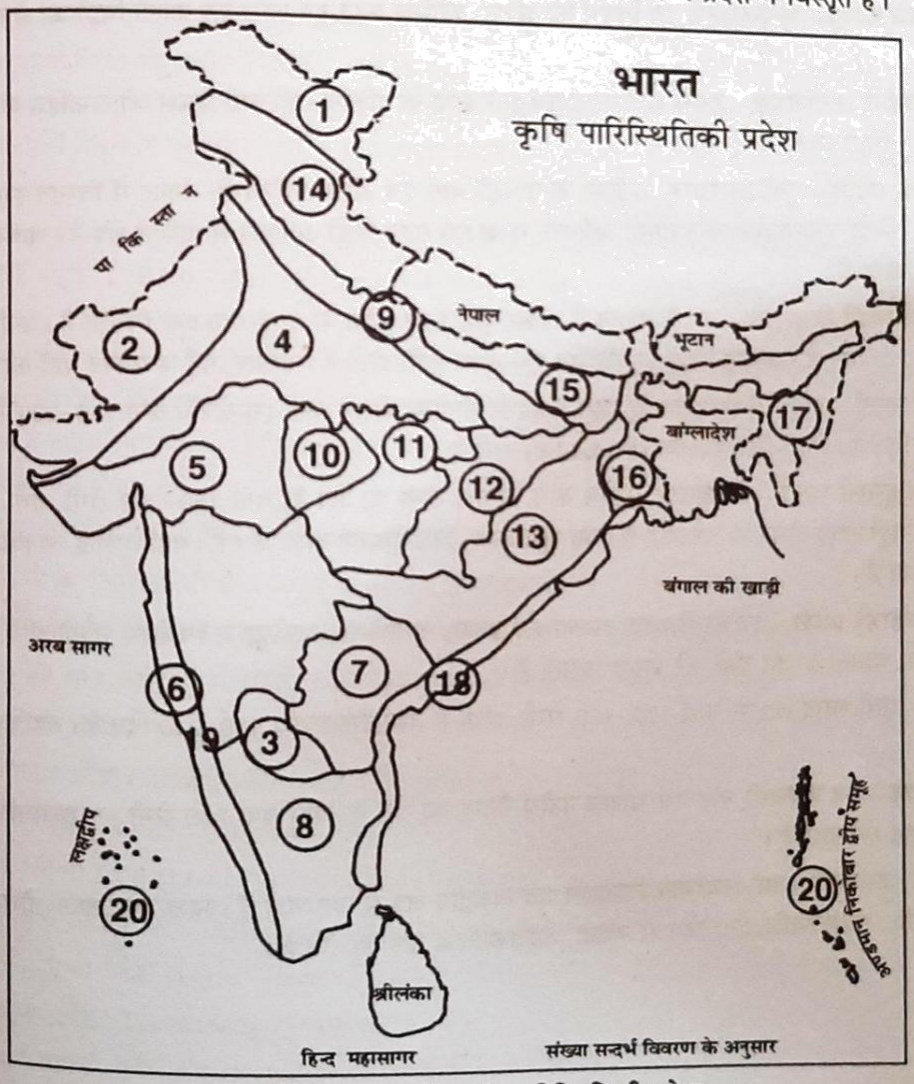

चित्र-18.3 : भारत के कृषि पारिस्थितिकी प्रदेश

6. दक्कन पठार—यह महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना में फैला हुआ है, यह छिछली एवं मध्यम गहरी काली मिट्टी का क्षेत्र है। वर्षा 60–100 सेमी. होती है, उपज अवधि 90–150 दिन है।

Disclaimer: This study material has been taken from the books and created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.

Disclaimer: This study material has been taken from the books and created for the academic benefits of the students alone and I do not seek any personal advantage out of it.